

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक संदर्शिका की भूमिका

लालधारी यादव*

उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा बुनियादी साक्षरता के महत्व को समझते हुए 2020 में 'मिशन प्रेरणा' की शुरुआत की गई, जिसे बाद में 'निपुण मिशन' में रूपांतरित करते हुए कक्षा 1 से 3 तक के शत-प्रतिशत विद्यार्थियों को भाषा और गणित की दक्षताओं में आयु और कक्षा के अनुरूप निपुण बनाने का लक्ष्य रखा गया है। भाषा व गणित के शिक्षण-अधिगम को आनंददायक व रोचक बनाने के लिए शिक्षक संदर्शिकाओं (Teacher Guides) का विकास किया गया है। इसी पर आधारित शोध अध्ययन कर यह शोध-लेख लिखा गया है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य शिक्षक संदर्शिका के उपयोग में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना व शिक्षक संदर्शिका के प्रभावी उपयोग हेतु शिक्षकों के सुझाव प्राप्त करना था। इस शोध अध्ययन में शोधार्थियों द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था। वाराणसी जनपद के परिषदीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 3 तक (सत्र 2023-24) भाषा व गणित विषय पढ़ाने वाले 150 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित 'शिक्षक संदर्शिका अनुप्रयोग प्रश्नावली' का उपयोग किया गया तथा संकलित आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत व विषयवस्तु विश्लेषण प्रविधि का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात हुआ कि शिक्षक संदर्शिका शिक्षकों के लिए एक वास्तविक मार्गदर्शिका है, जिसका उपयोग शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार के लिए किया जा रहा है। शिक्षक संदर्शिका में विषयवस्तु को सरल बनाने और प्रभावी समय प्रबंधन पर कार्य करने की आवश्यकता है, जिससे इसे और भी अधिक उपयोगी बनाया जा सके। इस हेतु शिक्षणशास्त्रियों, शैक्षिक प्रशासक, शिक्षक व अन्य हितधारकों को विभागीय कार्यों, शिक्षण योजना, अधिगम सामग्री व भाषायी जटिलताओं पर मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है, जिससे शिक्षक संदर्शिका को और भी अधिक प्रासंगिक बनाया जा सके।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा राष्ट्र निर्माण की आधारभूत के अंतर्गत शिक्षा को मौलिक अधिकार की श्रेणी आवश्यकता है। प्रत्येक राष्ट्र का यह कर्तव्य है कि अपने नागरिकों को आवश्यकतानुरूप शिक्षा प्रदान करें। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21(A) के अंतर्गत शिक्षा को मौलिक अधिकार की श्रेणी में सम्मिलित किया गया है। इसके साथ ही देश में निवास करने वाले 6 से 14 वर्ष तक की आयु के समस्त बच्चों को शिक्षा प्रदान करना एक

*प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सारनाथ वाराणसी, उत्तर प्रदेश 221007

कल्याणकारी राज्य का सर्वोच्च उद्देश्य होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सभी के लिए समावेशी एवं समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कक्षा 1 से 3 तक आधारभूत कौशलों के विकास हेतु भारत सरकार द्वारा वर्ष 2021 से 'निपुण भारत अभियान' की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों में मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का विकास करना है।

राष्ट्रीय मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन का उद्देश्य वर्ष 2026-27 तक प्राथमिक कक्षाओं में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त कराना है। इसके साथ यह भी सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे कक्षा 3 तक पढ़ने-लिखने और संख्या ज्ञान में कक्षा के स्तर की योग्यता प्राप्त कर लें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस संकल्पना पर आधारित है कि प्रत्येक विद्यार्थी 21वीं सदी की ज्ञान आधारित चुनौतियों से निपटने के लिए स्वयं को तैयार कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) से कक्षा 2 तक (उसे 8 वर्ष तक) शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 विकसित की गई है। यह पाठ्यचर्या बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए 3 से 8 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयुक्त रणनीतियों के साथ-साथ स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करती है।

शिक्षण बहुत ही अपेक्षाओं से भरा हुआ कार्य है। पेशेवर कौशल के विकास के लिए शिक्षकों को

साधन संपन्न होना चाहिए। *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* में शिक्षकों के पेशेवर विकास हेतु हैंडबुक या संदर्शिका के संदर्भ में कहा गया है कि "ऐसी हैंडबुक तैयार की जा सकती है, जो शिक्षकों को सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने की योजना बनाने के लिए मार्गदर्शित करें। ऐसी अतिरिक्त सामग्री के संदर्भ में इन हैंडबुक को और मूल्यवान बना सकते हैं, जिन्हें शिक्षक पढ़ सकें या जिन तक उनकी पहुँच हो सके।" (एन.सी.एफ.एफ.एस. 2022, पृष्ठ संख्या. 218) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा शिक्षण दक्षता में उन्नयन हेतु शिक्षकों को आधारशिला क्रियान्वयन शिक्षक संदर्शिका, भाषा व गणित कक्षा 1, 2 व 3 के लिए उपलब्ध कराई गई है। यह एक ऐसी लचीली संदर्शिका है, जिसके विभिन्न आयामों में वर्णित दक्षताओं का अनुकरण करते हुए शिक्षक अपने शिक्षण-अधिगम क्रियाकलापों को विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप बना सकते हैं।

शिक्षक संदर्शिका एक ऐसी हस्त पुस्तिका है, जो कक्षा में पढ़ाते समय शिक्षक के लिए विभिन्न तरीकों व तकनीकों की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। यह शिक्षक को कक्षा का प्रबंधन करने, सीखने की प्रक्रिया में नयी तकनीकों को अपनाने, शिक्षण सामग्री को क्रमिक रूप से चुनने व सीखने की प्रक्रिया को उचित स्वरूप प्रदान करने में मदद करती है। यह शिक्षक को विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान के अनुसार शिक्षण सामग्री, उपयुक्त तरीके व सीखने की गतिविधियों का चयन करने के साथ-साथ विद्यार्थियों की उपलब्धियों व गतिविधियों का आकलन करने में मदद करती है। रांझा (2019) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि शिक्षकों ने बेहतर शिक्षण के लिए शिक्षक संदर्शिका

की आवश्यकता और महत्व को स्वीकार किया। शिक्षकों ने पाठ योजना और गतिविधियों के लिए शिक्षक संदर्शिका का उपयोग किया, परंतु शिक्षक संदर्शिका सभी के लिए एक समान रूप से उपयोगी नहीं थी। कुछ शिक्षक इसका अच्छे तरीके से उपयोग कर रहे थे। उन्होंने कार्य की अधिकता, संदर्शिका की भाषा का जटिल होना व सुझाई गई गतिविधियों के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्री की कमी जैसी कठिनाइयों और चुनौतियों के बारे में भी चर्चा की। शिक्षकों ने शिक्षक संदर्शिका की भाषा, समय सारणी व शैक्षणिक कार्यक्रम से संबंधित विसंगतियों को दूर करने का सुझाव दिया। शोधार्थी ने प्रत्येक माह 10 परिषदीय विद्यालयों के सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के दौरान पाया कि शिक्षक संदर्शिका के उपयोग पर आधारित प्रशिक्षण प्राप्त करने के बावजूद भी शिक्षकों द्वारा साप्ताहिक शिक्षण चक्र के अनुरूप शिक्षण कार्य करने में समस्याएँ आ रही थीं। इसी शोध-अध्ययन को आधार बनाते हुए तथा निपुण भारत की पहलों के पश्चात शोधार्थी द्वारा वाराणसी जिले के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा शिक्षक संदर्शिका के उपयोग में आने वाली चुनौतियों एवं समस्या समाधान हेतु सुझावों को जानने हेतु शोध अध्ययन करना सुनिश्चित किया।

शोध का औचित्य

शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित निपुण भारत योजना की शुरुआत 5 जुलाई 2021 में की गई। इससे पूर्व उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा बुनियादी साक्षरता के महत्व को समझते हुए 2020 में 'मिशन प्रेरणा' की शुरुआत की गई, जिसे

बाद में 'निपुण मिशन' में रूपांतरित करते हुए कक्षा 1 से 3 तक के शत-प्रतिशत विद्यार्थियों को भाषा और गणित की दक्षताओं में उम्र और कक्षा के अनुरूप निपुण बनाने का लक्ष्य रखा गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसा पर लागू किए गए 'निपुण भारत मिशन' को उत्तर प्रदेश सरकार और शिक्षा विभाग ने गंभीरता से लिया तथा राष्ट्रीय बेंचमार्क वर्ष 2026-27 से एक वर्ष पूर्व अर्थात् 2025-26 में ही 'निपुण भारत मिशन' के सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संकल्प लिया है। इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग द्वारा 'अकादमिक वर्ष 2022-23 व अकादमिक वर्ष 2023-24 हेतु' भाषा व गणित की कक्षा 1 से 3 तक के सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए कार्य पुस्तिकाओं और शिक्षक संदर्शिकाओं का विकास किया गया। इन कार्य पुस्तिकाओं व संदर्शिकाओं को भाषा व गणित के शिक्षणशास्त्र के अनुरूप तैयार किया गया। शिक्षक संदर्शिकाओं में पूरे वर्ष के लिए दैनिक एवं सप्ताहिक शिक्षण-अधिगम एवं आकलन योजनाओं को सम्मिलित किया गया है। भाषा व गणित की कार्यपुस्तिकाएँ बच्चों को कक्षा-कक्ष में सीखने के रोचक अनुभव एवं अभ्यास के अवसर प्रदान करती हैं, वहीं गृहकार्य के अंतर्गत अभिभावकों को भी यह अवसर प्रदान करती हैं कि वे अपने बच्चों की शैक्षिक प्रगति को देख और समझ सकें व अपनी क्षमतानुसार सहयोग दे सकें। सतत आकलन को कार्यपुस्तिकाओं के माध्यम से एक व्यवस्थित स्वरूप दिया गया है। आकलन को कक्षा कक्षीय प्रक्रिया का हिस्सा मानकर इस तरह से डिजाइन किया गया है कि शिक्षक दिन-प्रतिदिन

बच्चों की प्रगति का आकलन करते हुए अपनी शिक्षण विधाओं में परिवर्तन कर सकें। आकलन की सम्यक व्यवस्था के अंतर्गत एक ओर साप्ताहिक और सावधिक आकलन के द्वारा शिक्षक बच्चों के सीखने की गति पर दृष्टि बनाए रख पाएँगे, वहीं दूसरी ओर आवश्यकता पड़ने पर अपनी शिक्षण विधि में बदलाव कर पाएँगे।

आधारभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान प्राप्त करने हेतु विकसित की गई शिक्षक संदर्शिका व कार्यपुस्तिका के बारे में जानकारी प्रदान करने हेतु 'निपुण भारत मिशन' के अंतर्गत चार दिवसीय शिक्षक-प्रशिक्षण प्राथमिक विद्यालय के समस्त शिक्षकों (शिक्षा मित्र सहित) को ब्लॉक स्तरीय संसाधन व्यक्तियों द्वारा दिया गया। शिक्षक संदर्शिका व कार्यपुस्तिका विद्यार्थियों में भाषा व गणित की दक्षता विकास हेतु शिक्षकों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण सामग्री है। संदर्शिका व कार्यपुस्तिका की उपयोगिता को देखते हुए यह अपेक्षित है कि सभी शिक्षक इसके बारे में बेहतर समझ विकसित

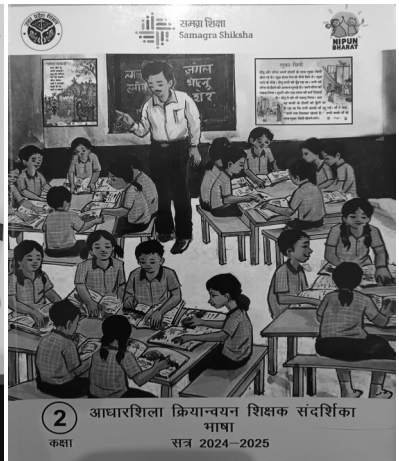
करें, जिससे निपुण भारत के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। इस हेतु शिक्षकों को इसकी उपयोगिता को समझते हुए इसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखना होगा। इन्हीं प्रयासों के आधार पर शोधार्थी द्वारा कक्षा 1 से 3 तक भाषा एवं गणित हेतु प्रयुक्त शिक्षक संदर्शिका आधारशिला क्रियान्वयन के उपयोग पर यह शोध अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की गई।

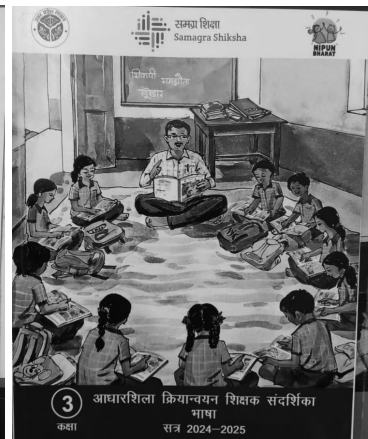
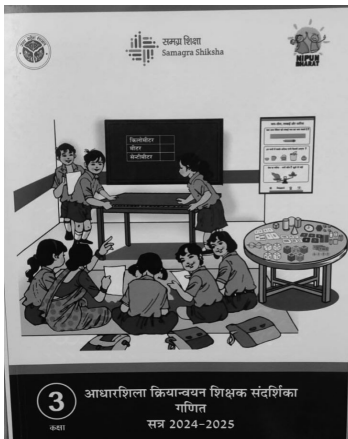
समस्या कथन

प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा आधारशिला क्रियान्वयन शिक्षक संदर्शिका के उपयोग में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

इस शोध अध्ययन में कक्षा 1 से 3 तक के शिक्षकों के लिए विकसित शिक्षक संदर्शिका से तात्पर्य आधारशिला क्रियान्वयन भाषा सत्र 2024-25 शिक्षक संदर्शिका व आधारशिला क्रियान्वयन शिक्षक संदर्शिका गणित सत्र 2024-25 से है।





शोध के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे—

1. शिक्षक संदर्शिका के उपयोग में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
2. शिक्षक संदर्शिका के प्रभावी उपयोग हेतु शिक्षकों के सुझाव प्राप्त करना।

विधि

इस शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा गुणात्मक शोध प्रतिमान के अंतर्गत वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के एकत्रीकरण एवं विश्लेषण हेतु गुणात्मक शोध उपागम का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या (समग्र)

इस शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद वाराणसी में परिषदीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 3 तक भाषा व गणित विषय में शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षकों को जनसंख्या के रूप में लिया गया था।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन में संभावित आधारित प्रतिदर्शन विधि एवं प्रविधि के आधार पर समग्र से संबंधित समस्त 9 ब्लॉकों में से सेवापुरी व चिरईगाँव ब्लॉक का चयन किया गया। पुनः यादृच्छिक चयन विधि द्वारा सत्र 2023-24 में सेवापुरी ब्लॉक से चयनित 29 प्राथमिक या कंपोजिट विद्यालय (जिनमें 1 से 8 तक की कक्षाएँ संचालित होती हैं) से कक्षा 1 से 3 तक भाषा व गणित में शिक्षण कार्य करने वाले 75 शिक्षकों तथा चिरईगाँव ब्लॉक के 30 प्राथमिक या कंपोजिट विद्यालय से कक्षा 1 से 3 तक भाषा व गणित में शिक्षण कार्य करने वाले 75 शिक्षकों अर्थात् दोनों ब्लॉकों से कुल 150 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया था।

उपकरण

इस शोध अध्ययन हेतु आँकड़ों का संग्रहण करने के लिए शोधार्थी द्वारा स्व-निर्मित शिक्षक संदर्शिका अनुप्रयोग प्रश्नावली (निर्माण वर्ष 2024) का प्रयोग किया। शिक्षक संदर्शिका अनुप्रयोग प्रश्नावली का

निर्माण कक्षा 1 से 3 तक भाषा तथा गणित विषय में शिक्षण कार्य करने वाले शिक्षकों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए किया गया। इस प्रश्नावली में तीन खंड थे। जिसमें खंड 'क' व 'ख' में शिक्षक संदर्शिका के विभिन्न भागों, जैसे— शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम व पाठ्यवस्तु, शिक्षण योजनाओं व सामान्य जानकारी पर आधारित 28 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया था। जबकि खंड 'ग' में शिक्षक संदर्शिका पर आधारित दो मुक्त छोर (Open question) प्रश्न दिए गए थे, जिनमें पहला प्रश्न शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली मुख्य समस्याओं पर व दूसरा प्रश्न शिक्षक संदर्शिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए शिक्षकों से प्राप्त सुझाव से संबंधित था।

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

इस शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा प्रतिशत व विषयवस्तु विश्लेषण प्रविधि का प्रयोग आँकड़ों के विश्लेषण हेतु किया गया था।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली चुनौतियों के संदर्भ में संपूर्ण न्यादर्श से प्रश्नावली के खंड 'क' व 'ख' में प्रयोग, शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु, शिक्षण योजनाओं व सामान्य जानकारी पर आधारित दिए गए प्रश्नों पर प्राप्त प्रतिक्रिया का तुलनात्मक प्रस्तुतीकरण प्रतिशत द्वारा किया गया। प्रश्नावली के खंड 'ग' में शिक्षक संदर्शिका के उपयोग में आने वाली मुख्य समस्याओं व शिक्षक

संदर्शिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए प्राप्त सुझावों का वर्णन किया गया है।

तालिका 1 — आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण

विद्यालय का प्रकार	शिक्षकों की संख्या	%
प्राथमिक	107	71
कंपोजिट	43	29

शिक्षक संदर्शिका अनुप्रयोग प्रश्नावली द्वारा विभिन्न पदों पर प्राप्त प्रतिक्रियाएँ

खंड क

तालिका 2 के आँकड़ों के विश्लेषण के पश्चात यह स्पष्ट है कि शिक्षक संदर्शिका में विभिन्न पाठ योजनाएँ पाठ्यपुस्तक से सरेखित हैं। इस सरेखन से शिक्षकों को सबसे ज़्यादा (81 प्रतिशत) पाठ्यचर्यात्मक गतिविधियों के आयोजन में मदद मिलती है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि आधारशिला क्रियान्वयन शिक्षक संदर्शिका (भाषा) में मौखिक भाषा विकास पर आधारित गतिविधियाँ, डिकोडिंग व पठन अभ्यास, मौखिक कहानी सुनाना, विभिन्न खेल गतिविधियाँ, रिमीडियल शिक्षण, ब्लेंडिंग पर कार्य, कविता, पोस्टर, चित्र चार्ट, अनुभव आधारित रोल प्ले या अभिनय व सृजनात्मक खेल गतिविधियों आदि के विषय में जानकारी दी गई है। इन क्रियाकलापों का जुड़ाव संदर्शिका के विभिन्न सप्ताह में दी गई शिक्षण योजनाओं से है, जिनका सरेखन पाठ्यपुस्तक से किया गया है। इसी प्रकार शिक्षक संदर्शिका गणित में विभिन्न सप्ताह में दी गई गतिविधियाँ, जैसे— गणित खेल, कार्यपुस्तिका के कार्य पत्रक व अन्य पाठ्यचर्यात्मक गतिविधियों का जुड़ाव पाठ्यपुस्तक से है।

**तालिका 2 — शिक्षक संदर्शिका के भाग-प्रयोग पर आधारित
प्रश्नों पर शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ**

क्र.सं.	प्रश्न	शिक्षकों की संख्या	%
	प्रयोग पर आधारित प्रश्न		
1.	शिक्षक संदर्शिका में विभिन्न पाठ योजनाओं का पाठ्यपुस्तक से संरेखित होने से शिक्षक को—		
	(i) पाठ्यचर्यात्मक गतिविधियों के आयोजन में मदद मिलती है।	122	81
	(ii) समय की बचत होती है।	5	3
	(iii) विषय वस्तु को समझने में मदद मिलती है।	23	16
2.	शिक्षक संदर्शिका से आप सबसे अधिक प्रयोग करते हैं—		
	(i) सैद्धांतिक समझ का	14	9
	(ii) शिक्षण योजना का	83	56
	(iii) कालांश की रणनीतियों का	53	35
3.	शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का प्रमुख कारण है—		
	(i) विभागीय कार्य की अधिकता	99	66
	(ii) शिक्षक संदर्शिका की भाषा	4	3
	(iii) प्रस्तावित गतिविधियों हेतु अधिगम सामग्री का अभाव	23	15
	(iv) शिक्षण योजना का क्लिष्ट होना	24	16
4.	शिक्षक संदर्शिका में सबसे अधिक सुधार की आवश्यकता है—		
	(i) शिक्षण योजना	23	15
	(ii) पुनरावृत्ति	27	18
	(iii) आकलन	13	9
	(iv) रिमीडियल व समेकन	87	58

शिक्षक संदर्शिका (भाषा) के तीन भाग हैं— 1. सैद्धांतिक समझ 2. शिक्षण योजना 3. कालांश की रणनीतियाँ। शिक्षकों द्वारा संदर्शिका से सबसे ज्यादा (56 प्रतिशत) शिक्षण योजनाओं का प्रयोग किया गया है। इसका मुख्य कारण शिक्षण योजना का शिक्षण प्रक्रिया को संरचित, व्यवस्थित और प्रभावी बनाना हो सकता है। इसके अलावा

आवश्यकतानुसार कालांश की रणनीतियों का भी प्रयोग शिक्षक द्वारा किया जा रहा है, क्योंकि यह अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं समृद्ध बनाते हुए अधिगम संप्राप्ति में मदद करती है।

विभागीय कार्यों की अधिकता (66 प्रतिशत) के कारण शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में कठिनाई आ रही है। प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों से बार-बार

सूचनाओं को माँगना, बाल गणना, अक्सर मीटिंग का आयोजन, जिला मुख्यालय से संबद्ध करना जैसे कार्यों के कारण शैक्षणिक क्रियाकलापों में व्यवधान आ सकता है तथा संदर्शिका का समुचित रूप से प्रयोग नहीं हो पाता है। शिक्षण योजना का क्लिष्ट होना (16 प्रतिशत) व प्रस्तावित गतिविधियों हेतु अधिगम सामग्री का अभाव (15 प्रतिशत) भी कुछ शिक्षकों के लिए शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का प्रमुख कारण है।

रिमीडियल व समेकन शिक्षण योजना में सबसे ज्यादा (58 प्रतिशत) सुधार की जरूरत है। इसका कारण यह हो सकता है कि शिक्षक संदर्शिका गणित में रिमीडियल व समेकन शिक्षण योजना का निर्माण शिक्षक द्वारा किया जाता है, जो उनके लिए एक कठिन एवं समय साध्य कार्य है। कुछ शिक्षकों द्वारा साप्ताहिक पुनरावृत्ति, शिक्षण योजना व आकलन प्रपत्र में भी सुधार करने पर बल दिया गया। शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता तथा प्रभावशीलता को बढ़ाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका के कारण ऐसा हो सकता है।

खंड ख

तालिका 3 में शिक्षक संदर्शिका में दी गई 'शिक्षण सामग्री के प्रयोग पर आधारित प्रश्नों' के अंतर्गत ज्यादातर (97 प्रतिशत) शिक्षकों द्वारा बताया गया कि शिक्षक संदर्शिका की भाषा आसानी से समझ में आ जाती है, गतिविधियाँ विषयवस्तु के अनुरूप हैं, यह पाठ्यपुस्तक की मार्गदर्शिका मात्र है, विषयवस्तु समझने के दृष्टिकोण से आसान है। संदर्शिका में दी गई शिक्षण योजनाएँ, गतिविधियाँ, उदाहरण व निर्देश पर्याप्त हैं। इस प्रकार शिक्षक संदर्शिका शिक्षक के लिए एक वास्तविक मार्गदर्शिका है, जिसका

उपयोग शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को सरल व प्रभावी बनाने के लिए कर रहे हैं। शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षक प्रायः शिक्षक संदर्शिका में दिए गए उदाहरणों अथवा गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य उदाहरणों अथवा गतिविधियों का प्रयोग अपनी सुविधा अनुसार करते हैं। विद्यार्थियों के विभिन्न परिवेश व स्तर के होने के कारण शिक्षकों के लिए यह आवश्यक प्रतीत होता है।

समेकन शिक्षण योजना या खोजें और जानें या रिमीडियल योजना बनाने में कुछ शिक्षकों (39 प्रतिशत) को कठिनाई होती है। ऐसा इसलिए हो सकता है, क्योंकि शिक्षक सप्ताह के प्रथम चार दिवस में अनुदेशनात्मक कार्य कर चुके होते हैं। अतः खोजें और जानें, समेकन व रिमीडियल शिक्षण योजना पर कार्य आसान हो जाता है। इस प्रकार तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि शिक्षण सामग्री के उपयोग पर आधारित पदों में सकारात्मक प्रतिक्रिया प्रतिशत ज्यादा, जबकि नकारात्मक प्रतिक्रिया प्रतिशत कम है अर्थात् शिक्षक संदर्शिका शिक्षकों के लिए एक विकल्प प्रदान करती है। इससे शिक्षक अपने कार्यों में निपुणता लाते हैं तथा कक्षा की विविधता से निपटने के लिए उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु से संबंधित कथनों के अंतर्गत शिक्षक संदर्शिका भाषा व गणित के अधिगम उद्देश्यों को पूरा करने में शिक्षकों (97 प्रतिशत) मदद करती है। इससे पाठ्यपुस्तकों से जुड़ी समस्याओं का आसानी से समाधान हो जाता है। शिक्षक संदर्शिका में पाठ्यक्रम का साप्ताहिक विभाजन उपयुक्त है। पाठ्यक्रम को समय पर पूरा करने में

**तालिका 3 — शिक्षक संदर्शिका के भाग-शिक्षण सामग्री पर आधारित प्रश्नों पर
150 शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ**

क्र. सं.	प्रश्न	हाँ	%	नहीं	%
	शिक्षण सामग्री पर आधारित प्रश्न				
1.	शिक्षक संदर्शिका की भाषा आसानी से समझ में आ जाती है।	145	97	5	3
2.	गतिविधियाँ विषयवस्तु के अनुरूप नहीं हैं।	25	17	125	83
3.	यह पाठ्यपुस्तक की मार्गदर्शिका मात्र है।	90	60	60	40
4.	शिक्षक संदर्शिका की विषयवस्तु समझने के दृष्टिकोण से बहुत जटिल है।	24	16	126	84
5.	शिक्षक संदर्शिका में दी गई शिक्षण योजनाएँ पर्याप्त नहीं हैं।	30	20	120	80
6.	प्रत्येक इकाई या विषय को पढ़ाने के लिए दी गई गतिविधियाँ, उदाहरण व निर्देश पर्याप्त नहीं हैं।	35	23	115	77
7.	प्रायः शिक्षक, संदर्शिका में दिए गए उदाहरणों अथवा गतिविधियों के अतिरिक्त अन्य उदाहरणों अथवा गतिविधियों का प्रयोग करते हैं।	147	98	3	2
8.	समेकन शिक्षण योजना/खोजें और जानें/रिमीडियल योजना बनाने में कोई कठिनाई नहीं होती है।	92	61	58	39

**तालिका 4 — शिक्षक संदर्शिका के भाग-पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु पर आधारित प्रश्नों पर
150 शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ**

क्र. सं.	पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु	हाँ	%	नहीं	%
1.	शिक्षक संदर्शिका गणित व भाषा के अधिगम उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करती है।	146	97	4	3
2.	शिक्षक संदर्शिका से पाठ्यपुस्तकों से जुड़ी समस्याओं का आसानी से समाधान हो जाता है।	122	81	28	19
3.	प्रत्येक दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए दिया गया समय पर्याप्त नहीं है।	75	50	75	50
4.	शिक्षक संदर्शिका में पाठ्यक्रम का साप्ताहिक विभाजन उपयुक्त है।	133	89	17	11
5.	शिक्षक संदर्शिका पाठ्यक्रम को समय पर पूरा करने में मदद करती है।	135	90	15	10
6.	शिक्षक संदर्शिका में पाठ्यपुस्तक का उपयोग करने के लिए पर्याप्त समय, सुझाव व संकेत दिए गए हैं।	136	91	14	9
7.	शिक्षक संदर्शिका में दिए गए निर्देश/सैद्धांतिक पक्ष स्पष्ट हैं।	140	93	10	7
8.	शिक्षक संदर्शिका में दिए गए उदाहरण विद्यार्थियों के दैनिक जीवन व अनुभवों से संबंधित नहीं हैं।	23	15	127	85

मदद करना, पाठ्यपुस्तक का उपयोग करने के लिए पर्याप्त समय, सुझाव व संकेत का दिया जाना, दिए गए निर्देश या सैद्धांतिक पक्ष का स्पष्ट होना तथा दिए गए उदाहरण विद्यार्थियों के दैनिक जीवन व अनुभवों से संबंधित होने जैसी विशेषताएँ शिक्षक संदर्शिका में समाहित हैं। गणित व भाषा से संबंधित सामग्री शिक्षणशास्त्र के अनुरूप क्रियान्वयन हेतु डिज़ाइन किए जाने से शिक्षक संदर्शिका पाठ्यक्रम तथा पाठ्यवस्तु आधारित आवश्यकताओं को पूरा करने में अधिकतर शिक्षकों के लिए सहायक है।

प्रत्येक दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए दिए गए समय को 50 प्रतिशत शिक्षकों ने पर्याप्त जबकि शेष 50 प्रतिशत शिक्षकों ने अपर्याप्त माना है। कुछ विद्यालयों में बहुस्तरीय कक्षाएँ होने के कारण शिक्षकों को शिक्षक संदर्शिका में उल्लिखित दक्षताओं को प्राप्त करने के लिए ज्यादा समय की जरूरत हो सकती है।

तालिका 5 में दर्शाया गया है कि शिक्षक संदर्शिका से संबंधित सामान्य जानकारी पर आधारित प्रश्नों के अंतर्गत शिक्षक संदर्शिका की विद्यालय में अकादमिक सत्र प्रारंभ होते ही उपलब्धता के संदर्भ में लगभग 49 प्रतिशत शिक्षकों से 'हाँ', जबकि 51 प्रतिशत शिक्षकों से 'नहीं' में प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। इसकी एक वजह विद्यालय में शिक्षक संदर्शिकाओं की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता न होना भी हो सकता है। अनुपलब्धता के कारण यह कुछ शिक्षकों को समय पर मिल जाती है, जबकि अन्य को समय पर नहीं मिल पाती है। इसके अलावा अन्य प्रश्नों, जैसे— शिक्षक संदर्शिका के उपयोग से सभी विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित हो रही है, शिक्षकों को शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए, दैनिक पाठ योजना बनाने की आवश्यकता नहीं है, दिए गए आकलन ट्रेकर शिक्षण दक्षताओं की सही जानकारी उपलब्ध कराने में सहायक हैं व शिक्षक संदर्शिका कक्षा 5

तालिका 5 — शिक्षक संदर्शिका के भाग सामान्य जानकारी पर आधारित प्रश्नों पर 150 शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ

क्र.सं.	सामान्य जानकारी पर आधारित प्रश्न	हाँ	%	नहीं	%
1.	शिक्षक संदर्शिका अकादमिक सत्र प्रारंभ होते ही विद्यालय में उपलब्ध हो जाती है।	74	49	76	51
2.	शिक्षक संदर्शिका के उपयोग से सभी विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित हो रही है।	138	92	12	8
3.	शिक्षकों को शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए।	110	73	40	27
4.	शिक्षकों के लिए दैनिक पाठ योजना बनाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि शिक्षक संदर्शिका में दी गई शिक्षण योजना पर्याप्त है।	95	63	55	37
5.	शिक्षक संदर्शिका में दिए गए आकलन ट्रेकर शिक्षण दक्षताओं की सही जानकारी उपलब्ध कराने में सहायक हैं।	145	97	5	3
6.	शिक्षक संदर्शिका कक्षा 5 तक सभी विषयों के लिए होनी चाहिए।	133	89	17	11

तक सभी विषयों के लिए होनी चाहिए के संदर्भ में अधिकतर शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक है, जबकि कुछ ही शिक्षकों का दृष्टिकोण नकारात्मक है।

तालिका 5 में दिए गए आँकड़ों से स्पष्ट है कि शिक्षक संदर्शिका शिक्षक को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग की बाध्यता से 27 प्रतिशत शिक्षक बचना चाहते हैं, ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि सभी शिक्षक प्रशिक्षित हैं और वे कक्षा शिक्षण में आवश्यकता अनुसार स्वयं तैयार की गई शिक्षण योजना से शिक्षण कार्य करना चाहते हैं।

खंड ग

तालिका 6 से स्पष्ट होता है कि शिक्षण रणनीतियों पर आधारित प्रश्नों के अंतर्गत शिक्षक संदर्शिका में कठिन समस्याओं का युक्ति संगत समाधान तथा भाषा व गणित में विषयवस्तु को कठिनाई स्तर (सरल से जटिल) के आधार पर व्यवस्थित किए जाने के संदर्भ में अधिकतर शिक्षकों ने सकारात्मक दृष्टिकोण व्यक्त किया। इस संदर्भ में कहा जा सकता है कि अधिकांश शिक्षक मानते हैं कि संदर्शिका में दिए गए समाधान व्यावहारिक तथा

शिक्षण प्रक्रिया में लागू किए जा सकने योग्य हैं। भाषा और गणित के पाठ्यक्रम में कठिनाई स्तर को सरल से जटिल क्रम में रखा जाना शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि पहले सरल अवधारणाएँ सीखने से जटिल अवधारणाओं को विद्यार्थी बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। यह क्रमबद्धता विद्यार्थियों की समझ को गहराई से विकसित करने एवं उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने में मदद करती है। इससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया भी सुव्यवस्थित होती है तथा विद्यार्थियों के सीखने की गति एवं प्रभावशीलता भी बढ़ती है।

- शोधार्थी द्वारा शिक्षकों से पूछे गए प्रश्न 'शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली मुख्य समस्याएँ कौन-कौन सी हैं?' पर शिक्षकों ने बताया कि—

विभागीय कार्यों की अधिकता, शिक्षक संदर्शिका का समय पर सभी शिक्षकों को न मिलना, सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए दिए गए समय का कम होना अथवा समय की बाध्यता, आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका (शिक्षक संदर्शिका) में दी गई शिक्षण योजनाओं की विषयवस्तु का जटिल, अस्पष्ट व विस्तारित न होना,

तालिका 6 — शिक्षक संदर्शिका के भाग-शिक्षण रणनीतियों पर आधारित प्रश्नों पर 150 शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ

क्र. सं.	शिक्षण रणनीतियों पर आधारित प्रश्न	हाँ	%	नहीं	%
1.	शिक्षक संदर्शिका में कठिन समस्याओं का युक्ति संगत समाधान दिया गया है।	118	79	32	21
2.	भाषा व गणित में विषयवस्तु को कठिनाई स्तर (सरल से जटिल) के आधार पर व्यवस्थित किया गया है।	137	91	13	9

शिक्षक संदर्शिका आधारित प्रशिक्षण का समय पर न होना, बच्चों की दैनिक उपस्थिति का कम होना, बच्चों की संख्या अधिक होने पर शिक्षक संदर्शिका के अनुसार प्रत्येक दक्षताओं को प्राप्त करने हेतु दिए गए समय का अपर्याप्त होना, बच्चों की कठिनाइयों को चेक करने या ट्रेकर भरने या गणित खेल या गतिविधियों व रिमीडियल कार्य हेतु समय की कमी, शिक्षकों की कमी अथवा अवकाश पर रहना, कक्षा में विभिन्न स्तर के बच्चों के लिए एक ही प्रकार की शिक्षण योजना या प्रक्रिया का होना, समय चक्र के पालन में कठिनाई अथवा कालांश की बाध्यता, भाषा का क्लिष्ट होना आदि प्रमुख समस्याएँ शिक्षकों द्वारा बताई गईं।

- शोधार्थी द्वारा शिक्षकों से पूछे गए प्रश्न 'शिक्षक संदर्शिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके अनुसार क्या-क्या परिवर्तन होने चाहिए?' के बारे में बताया कि—

दैनिक पाठों या शिक्षण योजनाओं को सरल बनाया जाए। पाठ्यक्रम या विषयवस्तु का कम और अधिक स्पष्ट तथा शिक्षक संदर्शिका व कार्य पुस्तिका सभी कक्षाओं एवं सभी विषयों के लिए होनी चाहिए। स्वयं की पाठ योजना से शिक्षण कार्य की स्वतंत्रता तथा सक्षम, मध्यम एवं संघर्षशील बच्चों के लिए अलग-अलग शिक्षक संदर्शिका व कार्यपुस्तिका तैयार की जाए। शिक्षक संदर्शिका में प्रत्येक

सप्ताह की समेकन शिक्षण योजनाएँ खोजें और जानें तथा रिमीडियल शिक्षण योजना भी बनी हो। शिक्षक संदर्शिका में दी गई पाठ योजनाओं को प्रयोग करने के लिए बाध्य न किया जाए। शिक्षण योजनाओं को कक्षा की स्थिति व स्तर के अनुसार बदलने की सुविधा तथा शिक्षण योजनाओं के प्रत्येक कालांश का विस्तृत वर्णन उसी जगह होना चाहिए। कक्षा 1 व 2 के बच्चों को गृहकार्य देने की आवश्यकता है तथा पाठ्यक्रम, विषयवस्तु, पाठ योजना व गतिविधियाँ सरल, सहज व रोचक होनी चाहिए। रिमीडियल कार्य हेतु समय बढ़ाया जाए व स्पष्ट दिशानिर्देश दिया जाए, कार्य पत्रक की संख्या में वृद्धि तथा आकलन के सप्ताह को बढ़ाया जाए। मात्राओं का अभ्यास हिंदी वर्णमाला के क्रमों के अनुसार होना चाहिए व सेवित क्षेत्र (निवास स्थान) के खेलों का समावेश किया जाए।

शिक्षकों द्वारा शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली मुख्य समस्याओं व संदर्शिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए प्राप्त सुझावों का विश्लेषण करने के पश्चात स्पष्ट है कि विभागीय कार्यों की अधिकता, संदर्शिका की भाषा व विषयवस्तु का क्लिष्ट होना, सुझाई गई गतिविधियों के लिए समय की कमी जैसी चुनौती तथा शिक्षक संदर्शिका की भाषा, शिक्षण योजना, शिक्षण सामग्री, समयसारणी व शैक्षणिक कार्यक्रम से संबंधित विसंगतियों को दूर करने का सुझाव दिया गया। इस प्रकार शोधार्थी द्वारा शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली मुख्य

चुनौतियाँ और सुझाव रांझा (2019) द्वारा प्राप्त शोध परिणाम से समानता रखते हैं। अतः शिक्षकों द्वारा प्राप्त अनुक्रिया तथा उपयोग में आने वाली मुख्य समस्याओं व सुझावों का शिक्षक संदर्शिका के निर्माण से जुड़े हुए व्यक्तियों, हितधारकों, शिक्षकों, प्रशिक्षकों व प्रशासकों द्वारा उपयोग में लाकर शिक्षक संदर्शिका को कक्षागत क्रियाकलापों के लिए प्रभावी बनाया जाए।

निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शैक्षणिक क्रियाकलापों में शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली चुनौतियों से संबंधित अलग-अलग चरों पर आधारित उद्देश्य का निर्माण किया गया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा स्व-निर्मित 'शिक्षक संदर्शिका अनुप्रयोग प्रश्नावली' द्वारा विविध जानकारी प्राप्त कर विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के पश्चात ज्ञात निष्कर्ष के रूप में बताया गया है कि शिक्षक संदर्शिका में विभिन्न पाठ योजनाओं का पाठ्यपुस्तक से संरेखित होने से शिक्षक को पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन में सबसे ज्यादा मदद मिलती है। शिक्षक संदर्शिका से शिक्षकों द्वारा सबसे ज्यादा शिक्षण योजना का प्रयोग किया जाता है। शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का प्रमुख कारण विभागीय कार्य की अधिकता है तथा शिक्षक संदर्शिका में सबसे ज्यादा रिमीडियल व समेकन योजना में सुधार की जरूरत है।

शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली मुख्य समस्याओं के संदर्भ में शिक्षकों द्वारा विभागीय कार्य की अधिकता, बच्चों की दैनिक उपस्थिति का कम होना, प्रशिक्षण का समय पर न मिलना, सीखने के

प्रतिफल को प्राप्त करने के लिए दिए गए समय का कम होना, शिक्षकों की कमी अथवा अवकाश पर रहना, संदर्शिका की भाषा का जटिल होना आदि कमियाँ बताई गईं। इन्हें दूर करके संदर्शिका को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। इसी प्रकार शिक्षक संदर्शिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए शिक्षण योजनाओं को सरल बनाना, सभी कक्षाओं एवं विषयों के लिए शिक्षक संदर्शिका की उपलब्धता, प्रत्येक सप्ताह की समेकन शिक्षण योजना, खोजे व जानें तथा रिमीडियल शिक्षण योजना बनी हो, अलग-अलग स्तर के बच्चों के लिए संदर्शिका व कार्यपुस्तिका की उपलब्धता जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए।

सुझाव

इस शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर विभिन्न हितधारकों को ध्यान में रखते हुए लिखे गए हैं, जो इस प्रकार हैं—

- शिक्षक संदर्शिका से संबंधित प्रयोग आधारित शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम और पाठ्यवस्तु, शिक्षण रणनीतियों व सामान्य जानकारी पर आधारित विभिन्न कथनों पर शिक्षकों द्वारा सकारात्मक अनुक्रिया प्राप्त हुई अर्थात् शिक्षक संदर्शिका शिक्षकों के लिए एक वास्तविक मार्गदर्शिका है, जिसका प्रयोग शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार के लिए किया जा रहा है।
- शिक्षक संदर्शिका में विषयवस्तु को समझने के दृष्टिकोण से सरल बनाने और प्रभावी समय प्रबंधन पर कार्य करने की आवश्यकता है, जिससे इसे और भी ज्यादा उपयोगी बनाया जा सके।

- शिक्षाशास्त्रियों, शैक्षिक प्रशासक, शिक्षक व अन्य हितधारकों को विभागीय कार्यों, शिक्षण योजना, अधिगम सामग्री व भाषायी जटिलताओं पर मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है, जिससे शिक्षक संदर्शिका को और भी ज्यादा प्रासंगिक बनाया जा सके।
- शिक्षक संदर्शिका के प्रयोग में आने वाली प्रमुख समस्याओं के संदर्भ में शिक्षकों द्वारा बताया गया कि विभागीय कार्य की अधिकता, संदर्शिका का समय पर सभी अध्यापकों को न मिलना, अधिगम संप्राप्ति के लिए कम समय का दिया जाना, संदर्शिका आधारित प्रशिक्षण का समय पर न होना, बच्चों की दैनिक उपस्थिति में कमी आदि हैं। इन समस्याओं का समाधान करके शिक्षक संदर्शिका की उपादेयता बढ़ाई जा सकती है।
- शिक्षक संदर्शिका को अधिक उपयोगी बनाने के लिए शिक्षकों से अलग-अलग सुझाव प्राप्त हुए। इसमें शिक्षकों ने बताया कि दैनिक शिक्षण योजना को छोटा व सरल बनाना, शिक्षण योजना के प्रयोग हेतु बाध्य न करना, स्वयं की शिक्षण योजना से शिक्षण कार्य की स्वतंत्रता, शिक्षक संदर्शिका व कार्यपुस्तिका की सभी कक्षाओं व विषयों के लिए उपलब्धता, विभिन्न स्तर के बच्चों के लिए अलग-अलग संदर्शिका व कार्यपुस्तिका की उपलब्धता जैसे महत्वपूर्ण

सुझाव दिए गए। इन सुझावों पर अमल करते हुए, शिक्षक संदर्शिका को और भी अधिक प्रासंगिक बनाया जा सकता है।

इस प्रकार शिक्षक संदर्शिका अनुप्रयोग प्रश्नावली में दिए गए कथनों के सापेक्ष प्राप्त अनुक्रिया से स्पष्ट है कि शिक्षक संदर्शिका कक्षा 1 से 3 तक भाषा व गणित विषय में शिक्षण कार्य हेतु शिक्षकों के लिए वास्तविक मार्गदर्शिका है। इसका प्रयोग करके शिक्षक अपने कार्यों में निखार ला सकता है। परंतु पाठ्यपुस्तक की सभी गतिविधियों को शिक्षकों द्वारा दिए गए अनुक्रिया अथवा सुझावों के अनुसार संचालित करना संभव नहीं है। शिक्षकों ने बेहतर शिक्षण के लिए शिक्षक संदर्शिका की आवश्यकता और महत्व को स्वीकार किया, परंतु सभी के लिए संदर्शिका एक समान रूप से उपयोगी नहीं है। ज्यादातर शिक्षक इसका अच्छी तरह से उपयोग कर रहे थे, जबकि कुछ शिक्षकों को इसके उपयोग में अनेक चुनौतियाँ आ रही थीं। अतः महत्वपूर्ण सुझावों को उपयोग में लाकर समस्याओं का निराकरण करते हुए शिक्षक संदर्शिका को कक्षागत क्रियाकलापों के लिए उद्देश्यपूर्ण, प्रभावी और उपयोगी बनाया जा सकता है, जिससे शिक्षक संदर्शिका पाठ्यक्रम के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए शिक्षकों को उचित शिक्षण सामग्री, शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन प्रक्रिया के चयन में सहयोग प्रदान कर सके।

संदर्भ

- आधारशिला क्रियान्वयन शिक्षक संदर्शिका (भाषा व गणित). कक्षा 1, 2, 3. पाठ्यपुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक). basicshiksha.up.in/teacher-guides/ link से जून 2024 को प्राप्त किया. उत्तर प्रदेश.
- कार्नेल, डब्लू. 2015. *सेल्फ-डाइरेक्टेड लर्निंग मॉडल: ए कंपरेटिव एनालिसिस*.
- कार्यपुस्तिका (भाषा व गणित). कक्षा 1, 2, 3. पाठ्यपुस्तक विभाग. शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उत्तर प्रदेश.
- www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/Draft_NEP_2019_EN_Revised.pdf 10 मार्च 2024 को देखा गया।
- [www.basiceducation.up.gov.in/page/nipun-bharat-\(mission-prerna\)](http://www.basiceducation.up.gov.in/page/nipun-bharat-(mission-prerna)) Retrived on 6 अप्रैल 2024 को देखा गया।
- www.differencebetween.com 15 अप्रैल 2024 को देखा गया।
- www.teacherscare.in Retrived on 17 अप्रैल 2024 को देखा गया।
- फ़ारूकी, एस. 2008. टीचर्स परसेप्शन्स ऑफ़ टेक्स्टबुक एंड टीचर्स गाइड — ए स्टडी इन सेकेंडरी एजुकेशन इन बांग्लादेश. *दी जर्नल ऑफ़ आस्ता*. टेप्पल वॉल्यूम 4.
- बुद्ध, के.बी. 2016. *टीचर्स एटीट्यूड टुवर्ड्स यूजिंग टीचर्स गाइड एट प्राइमरी लेवल इन जयारकोट डिस्ट्रिक्ट*. (मास्टर डिग्री थीसिस). डिपार्टमेंट ऑफ़ मैथमेटिक्स एजुकेशन. त्रिभुवन यूनिवर्सिटी, कीर्तिपुर, काठमांडू.
- भट्ट, महादेव. 2017. *टीचर्स एटीट्यूड टुवर्ड्स दी यूज ऑफ़ टीचर्स गाइड*. (मास्टर डिग्री थीसिस). डिपार्टमेंट ऑफ़ मैथमेटिक्स एजुकेशन. त्रिभुवन यूनिवर्सिटी, काठमांडू.
- मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.
- रांझा, फायाज अहमद और अन्य. 2019. यूज एंड यूटिलिटी ऑफ़ टीचर गाइड्स फ़ॉर प्राइमरी स्कूल टीचर्स इन पंजाब. *रिव्यू ऑफ़ इकनोमिक्स एंड डेवलपमेंट स्टडीज*. 5(1), मार्च 2019. आई.एस.एस.एन. 2519-9692 आई.एस.एस.एन.(ई) 2519-9706.
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022*. रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली.
- ली, बी. और एच. सारा. 2012. *एटीट्यूड ऑफ़ स्टूडेंट्स-टीचर टुवर्ड्स रिटेन टीचर्स गाइड*. *हायर एजुकेशन स्टडीज*. 2(1).
- शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल 2022-23 व 2023-24. पाठ्यपुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उत्तर प्रदेश.
- श्रेष्ठा. 2016. *ए रिसर्च मटेरियल फ़ॉर लोअर सेकेंडरी इंग्लिश टीचर्स*. सनलाइट पब्लिकेशन, काठमांडू.